पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गयी मटर की नई उन्नतशील प्रजातिः पंत मटर–554

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी, उत्तर प्रदेश में दिनांक 19 से 21 अगस्त, 2025 तक आयोजित रबी दहलनों की वार्षिक बैठक में उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) की अध्यक्षता में हुई प्रजाति विमोचन समिति में गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा विकसित मटर की एक नई अधिक उपज देने वाली रोग एवं कीट रोधी प्रजातियों को किसानों द्वारा उगाये जाने हेतु निर्णय लिया गया। इस विश्वविद्यालय द्वारा विकसित प्रजातियों को किसानों द्वारा उगाये जाने के लिये चिन्हित किये जाने पर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान द्वारा खुशी व्यक्त करते हुए परियोजना में कार्यरत समस्त वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को बधाई दी। साथ ही कि अपने स्थापना के बाद से ही इस विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न फसलों की विकसित प्रजातियां देश के किसानों के मध्य अत्यन्त लोकप्रिय है तथा इस विश्वविद्यालय का देश को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने में विशेष योगदान रहा है और इसी कारण इस विश्वविद्यालय को हरित क्रान्ति की जननी भी कहा गया है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में विश्वविद्यालय कृषि के क्षेत्र में बदलते परिवेश में किसानों विशेषकर छोटे एवं सीमान्त किसानों की खेती को लाभदायक बनाने से संबंधित शोध कार्यों पर विशेष जोर दे रहा है। डा. चौहान ने बताया कि विगत तीन वर्षों के दौरान इस कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न दलहनी फसलों की कुल 14 प्रजातियां अखिल भारतीय स्तर पर उगाये जाने हेतु जारी की जा चुकी है जोकि किसी एक कृषि विश्वविद्यालय द्वारा इसी अवधि के दौरान विकसित की गयी प्रजातियों में अपने आप में एक अभूतपूर्व उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा वर्ष 2047 तक देश को पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य रखा गया है। वर्ष 2047 तक देश की कुल दलहन आवश्यकता लगभग 460–480 लाख टन होगी। इसी के दृष्टिगत इस विश्वविद्यालय द्वारा दीर्घकालीन शोध योजनाओं के तहत विभिन्न दलहनी फसलों की उन्नतशील, अधिक उपज देने वाली, रोग एवं कीट रोधी तथा जलवायु अनुकूल प्रजातियों को विकसित करने पर कार्य किये जा रहे है। इसी वर्ष मई में विश्वविद्यालय द्वारा खरीफ दलहनों की अखिल भारतीय स्तर पर जारी की गयी 5 किस्मों में से 2 प्रजातियों को विकसित किया गया था। विगत वर्ष 2024 में रबी दलहनों की अखिल भारतीय स्तर पर जारी की गयी 7 प्रजातियों में से 3 प्रजातियां तथा वर्ष 2023 के दौरान कुल 20 प्रजातियों में से 7 प्रजातियां पंत कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गयी थी। विश्वविद्यालय की छोटे एवं मझोंले दलहन उत्पादक किसानों की आर्थिकी को मजबूत करने के दृढ़ संकल्प को प्रदर्शित करता है। निदेशक शोध डा. ए.एस. नैन ने बताया कि देश के दलहन उत्पादन में पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा विकसित प्रजातियों का विशेष योगदान रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों को समय पर उन्नत किस्मों के बीज पर्याप्त मात्रा में उत्पादित कर उपलब्ध कराये जा रहे है, जिससे देश के दलहन उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014–15 तक देश में कुल दलहनों का उत्पादन लगभग 150–160 लाख टन ही था जोकि देश की आबादी की दलहन आवश्यकता को पूरा करने में नाकाफी था तथा विभिन्न दलहनों का सरकार को ना केवल आयात करना पड़ता था बल्कि ऊंची कीमतों एवं कम उपलब्धता के कारण जनमानस में भी व्यापक असंतोष रहता था। विगत वर्ष 2023–24 के दौरान देश का कुल दलहन उत्पादन 245 लाख टन था। देश में दलहन के उत्पादन को बढ़ाने में पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा विकसित प्रजातियों का विशेष स्थान रहा है। दहलन परियोजना समन्वयक डा. एस.के. वर्मा ने बताया कि वर्तमान में विभिन्न दलहनों की रोग एवं कीट रोधी अधिक उपज देने वाली ऐसी प्रजातियों के विकास पर जोर दिया जा रहा है जो बदलती जलवायु, घटते जलस्तर एवं भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप हो तथा वर्ष 2030 तक देश की अनुमानित दलहन आवश्यकता लगभग 320 लाख टन को पूरा करने में सक्षम है।

प्रजातियों को विकसित करने के क्रम में इस वर्ष मटर की एक उन्नतशील प्रजाति पंत मटर 554 को देश के उत्तरी पश्चिमी राज्यों जैसे पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्र, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान एवं जम्मू सम्भाग में उगाये जाने हेतु संस्तुत किया गया। इस नयी विकसित प्रजाति की विषेशताएं निम्नवत् है– पंत मटर 554 – लगातार तीन वर्षों तक देश के उत्तरी पश्चिमी भागों में किये गये उपज परीक्षणों में इसकी औसत उपज 20–22 कु./हेक्टेयर रही जोकि मानक प्रजातियों अमन, पंत मटर 42 एवं एच.एफ. पी. 9907बी. से 22, 26 एवं 28 प्रतिशत अधिक रही। यह प्रजाति चूर्णी फंफूदी और एस्कोकाईटा ब्लाइट तथा फली बेधक कीट के लिये प्रतिरोधी है। इसकी परिपक्वता अवधि 125–130 दिन है। इसके दाने मध्यम आकार के तथा 100 दानों का वजन लगभग 18–20 ग्राम है। इसके पौधे की ऊंचाई लगभग 140–150 से.मी. है।